भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध संदर्भ

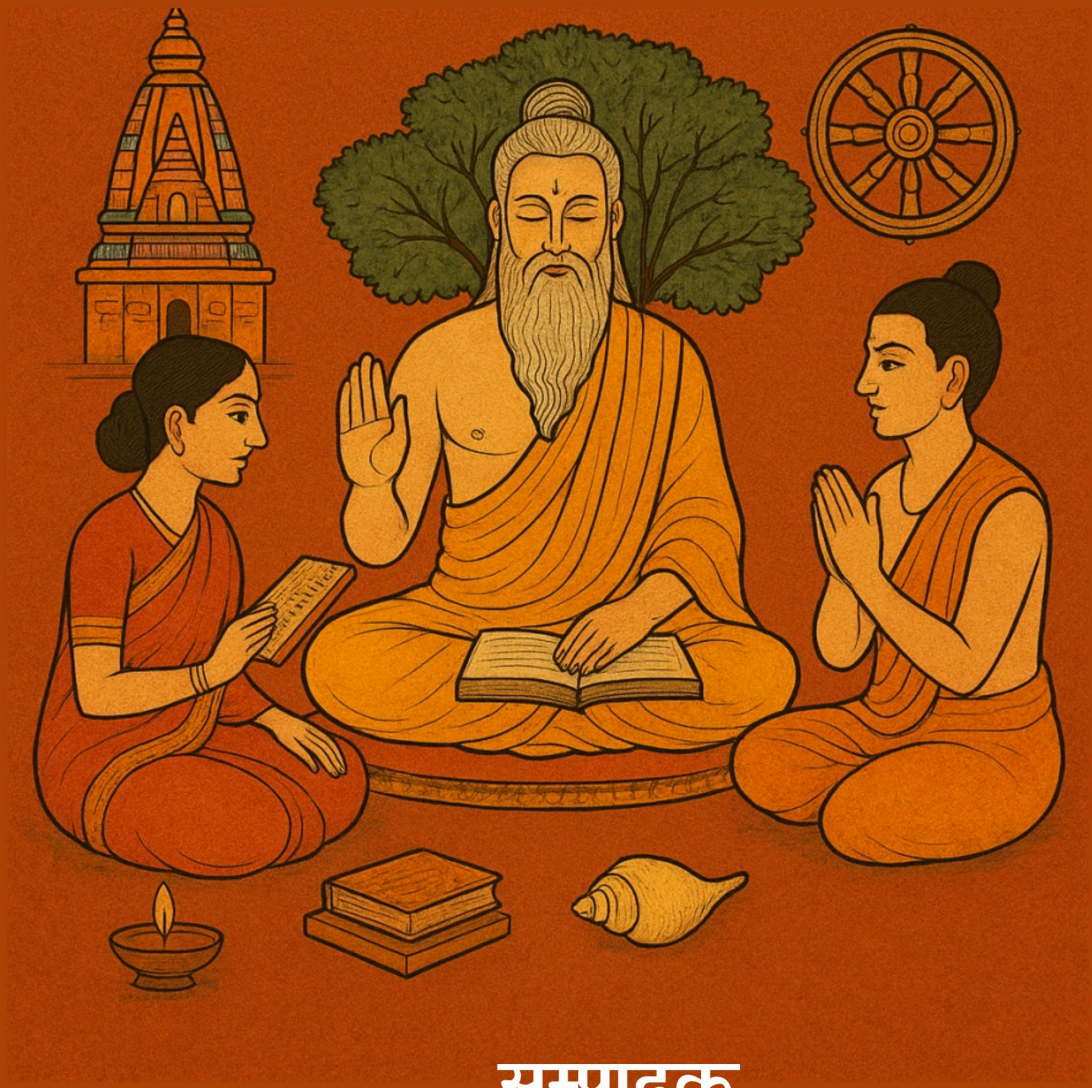

सम्पादक

डॉ0 संजीव कुमार विश्वकर्मा

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारतीय ज्ञान परम्परा : विविध संदर्भ

सम्पादक

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२५

ISBN 978-93-47100-40-6

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ४५० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

अनुक्रमणिका

1.	बदलता भारत : एक नजर **डॉ. एच.सी. अहिरवार**	15
2.	भारतीय ज्ञान परम्परा में आर्थिक दृष्टिकोण **डॉ. बलराम चैरसिया**	18
3.	भारतीय शैक्षिक परंपरा में वसुधैव कुटुम्बकम: एक अतीत, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन **डॉ. ममता गौतम**	22
4.	नाट्यशास्त्र की जीवंत परंपरा: भाषा, पात्र और मंच के माध्यम से भारतीय चरित्रों की आधुनिक रंगसंरचना **राणा वैभवकुमार जगदीशकुमार**	31
5.	प्राचीन भारत में स्थानीय स्वशासन का महत्व **डॉ. अभय कुमार**	44
6.	भारतीय ज्ञान परम्परा का राजनीतिक आयाम **डॉ. ज्योति सिंह बघेल**	50
7.	भक्तिकालीन संत साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की अभिव्यक्ति **मोनिका धाकड़**	54
8.	भारतीय समाज में संस्कारों का महत्व **डॉ.भरत लाल चौरसिया, श्रीमती मीनाक्षी पात्रे**	64
9.	भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में आचार्य सूर्यनारायण गौतम के बघेली साहित्य में भक्ति: एक अध्ययन **डॉ. रश्मि जैन, धर्मेन्द्र कुमार भारती**	68
10.	मानव मूल्यों के निर्धारण में कुषल व्यक्तित्व एवं आदर्ष चरित्र की भूमिका **किरण नागराज (वानखेडे)**	73
11.	नव शैक्षणिक तकनीक और डिजिटल क्रांति **डॉ. सरिता भवानी मालवीय**	79
12.	भारतीय ज्ञान परंपरा में स्वामी विवेकानंद और उनका दर्शन **डॉ. नारायण दत्त विल्सन**	86

13.	भारत की प्राचीन ज्ञान परम्परा **विनीत सोलंकी**	92
14.	भारतीय ज्ञान परम्परा व वास्तुकला-**डॉ. भुपेन्द्र कौर**	97
15.	भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक तकनीक का अंतर्संबंध **डॉ. रौबी फौजदार**	106
16.	बौद्ध कालीन आयुर्वेदिक पद्धति के प्रमाण और उनका सांस्कृतिक महत्व-**कुमारी शिखा**	110
17.	भारतीय ज्ञान परंपरा: कला और साहित्य के संदर्भ में **गणेश कुमार जाट**	118
18.	पञ्चकोशीय दृष्टिकोण से समग्र शिक्षा: एक भारतीय दार्शनिक परिप्रेक्ष्य-**डॉ आद्या शक्ति राय, रेनू ओझा**	121
19.	भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य **डॉक्टर तनुजा बंसोड़**	132
20.	भारतीय पांडुलिपि परंपरा और आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान: एक तुलनात्मक अध्ययन-**परमतदीन कुशवाहा**	138
21.	प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति और गुरुकुल पद्धति **डॉ. लक्ष्मी मिश्रा**	147
22.	आदिवासी जीवन-दर्शन में 'पर्यावरण-संरक्षण' का ज्ञान : बैगा जनजाति की भारतीय परंपरा से प्राप्त सीख (बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में)-**राजेन्द्र गणवीर**	156
23.	भारतीय ज्ञान परम्परा एवं प्रमुख दार्शनिक **सुदर्शन वालओण्डर**	162
24.	डिजिटल भुगतान में हिन्दी भाषा की सार्थकताः भारतीय ज्ञान परंपरा के सन्दर्भ में - **श्रीमती नीतू यादव**	166
25.	प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और उसका आधुनिक स्वरूप **उदय कुमार**	171
26.	भारतीय ज्ञान परंपरा में निर्गुण संत कवियों का योगदान **संदीप कुमार**	180
27.	भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक प्रासंगिकता **प्रगति त्रिपाठी**	185

28.	वैदिक शिक्षा प्रणाली: भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में **डॉ. मोहम्मद काशिफ नईम**	193
29.	भारतीय पर्यावरण चेतना ,समकालीन चुनौतियां और भविष्य के समाधान-**संदीप सोनी**	202
30.	भारतीय ज्ञान परंपरा-**श्रीमती मीरा यादव**	214
31.	रामायण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और भारतीय संस्कृति का स्वरूप-**सुशील कुमार बौद्ध**	226
32.	लोकज्ञान और भारतीय समाज : ग्रामीण परंपराओं में निहित ज्ञान-संस्कृति का अध्ययन-**लावन्या पि**	233
33.	भारतीय ज्ञान परंपरा में खेल का महत्व-**डॉ. सोना विश्वकर्मा**	237
34.	भारतीय ज्ञान पंरपरा में आयुर्वेदिक काल का महत्व **डॉ. शीतल ठाकुर**	242
35.	भारतीय ज्ञान परम्परा में समाज का उत्तरदायित्व **श्री आर.पी.अहिरवार**	246
36.	नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में भारतीय ज्ञान परंपरा की एक झलक- **सविता जाटव**	249
37.	भारतीय संस्कृति एवं परम्परा का ज्ञान और उसका महत्व **नेहा विश्वकर्मा**	253
38.	व्यक्तित्व विकास में सहायक भारतीय ज्ञान परंपरा **डॉ. कादम्बिनी मिश्रा**	258
39.	समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारतीय गणितीय परंपरा की प्रासंगिकता- **श्री राजेन्द्र गुप्ता, श्री दीपक गुप्ता**	261
40.	प्राणी विज्ञान की भारतीय परंपरा में प्रासंगिकता **कु. सपना राजपूत**	266
41.	भारतीय संस्कृति: विविधता में एकता की अमर छवि **डॉली पाण्डेय**	275
42.	भारतीय ज्ञान परंपरा में जीव विज्ञान का योगदान **श्री सुनील कुमार चौरसिया**	280
43.	भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रयोगात्मक पद्धति का भौतिक दृष्टिकोण **आशीष सोनी**	283

44.	भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण -**आशीष सोनी**	291
45.	भारतीय ज्ञान परंपरा: हमारी सांस्कृतिक धरोहर- **कु. रिचा दुबे**	296
16.	Indian Knowledge System in the field of Economics **Umesh Kumar Ahirwar**	301
47.	From Heritage to Vision: Indian Knowledge Tradition and the National Education Policy 2020 for Viksit Bharat @2047 **Mamta Sharma, Sandeep K Sharma**	306
48.	Indian Knowledge System: A Holistic Framework for Sustainable Future **Dr Krishna Chandra Mishra, Prof. R. K. Jain**	315
49.	Ancient Indian Knowledge and its Relevance to Contemporary Chemistry **Anil Kumar Koshal, Nidhi Chauhan**	319
50.	Transforming India's Education System: Pathways to a Viksit Bharat under NEP 2020 **Prashant Thote and Gowri sS**	324
51.	Invisible Communication in Indian Knowledge Tradition: — The Mystery and Experience of Telepathy **Pratiksha Tiwari**	331

14

भारतीय ज्ञान परम्परा व वास्तुकला

डॉ. भुपेन्द्र कौर, सहायक प्राध्यापक
शिक्षाशास्त्र विभाग, स्कूल ऑफ एजूकेशन एण्ड ह्यूमैनिटीज,
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

भारत का वास्तुशिल्प सौन्दर्य और उपेक्षित इमारतें

भारत दुनिया के उन देशों में है जिसका इतिहास पाँच हजार साल से भी पुराना है। उत्तर में हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं से शुरू होकर दक्षिण में अरब सागर, हिन्दी महासागर और बंगाल की खाडी के मिलन-स्थल तथा कन्याकुमारी तक, उत्तर-पूर्व में म्यांमार और चीन की सीमा से लगाकर पश्चिमी में पाकिस्तान की सीमा के साथ लगे कच्छ के रन तक फैले इस महान देश के इतिहास और सांस्कृति विरासत के प्रतीक मन्दिर, मस्जिद, गुद्वारें, चर्च, किले, हवेलियाँ, स्तूप एवं अन्य स्मारकों की संख्या हजारों में हैं। 3214 किमी लम्बे और 2933 किमी चौडाई में फैले इस देश के लगभग सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक और पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रतीकों और स्मारकों में भारत का वास्तुशिल्प सौन्दर्य बिखरा पडा है। प्राचीन समय से ही न केवल भारतीय बल्कि पूरी दुनिया के लोग इन स्मारकों को देखने आते हैं। भारतीय अतीत की शानदार परम्परा के इन अनुपम उदाहरणों को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं बल्कि इन्हें एक बार फिर देखने के लिए वे बार-बार आना चाहते हैं।

भारत के वास्तुशिल्प के इन नायाब नमूनों के सौन्दर्य और विविधता का ब्योरा दे पाना किसी के लिए एक लेख में तो क्या सम्भव होगा, इनमें से एक-एक स्मारक ऐसा है कि जिस पर एक क्या कई-कई किताबें लिखी जा सकती है और लिखी गयी हैं। इन स्मारकों की संख्या और भारत का पूरी दुनिया की विरासत के रूप में इनके महत्त्व का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोगी संगठन यूनिसेफ ने भारतीय उपमहाद्वीप में बने डेढ दर्जन से भी अधिक प्राचीन स्मारकों को विश्व धरोहर की संज्ञा दे रखी है और उसके रख-रखाव और संरक्षण के लिए विशेष प्रयास कर रखा है। इन स्मारकों में प्रमुख है-खुजराहो के मन्दिर, साँची का बौद्ध स्तूप, अजन्ता-एलोरा की गुफाएँ, कोणार्क का सूर्य मन्दिर और हम्फी।

भारत सरकार द्वारा पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्मारकों के रख-रखाव, इस क्षेत्र में अनुसंधान और संरक्षण के लिए गठित संगठन पुरातत्व सर्वोक्षण विभाग द्वारा संरक्षित घोषित किये गये स्मारकों की संख्या पाँच हजार से भी अधिक है। विभिन्न राज्यों की सरकारें और केन्द्रशासित प्रदेशों के प्रशासन ने भी अपने-अपने स्तर पर इस तरह के विभाग गठित किये है। इन विभागों की सूचियों में हजारों की संख्या में ऐसे स्मारकों का ब्यौरा दर्ज है जिनके संरक्षण का प्रयास किया जा रहा है या जिन्हें संरक्षित घोषित किया गया है। इसके बावजूद पूरे देश के जंगलों, पहाडों, घाटियों और अन्य दूरदराज के क्षेत्रों में आज भी ऐसे स्मारकों और स्थलों के होने का अनुमान है जिनका विधिवत् सर्वेक्षण तक नहीं हो पाया है। आये दिन इतिहासकार पुरातत्व विशषज्ञ एवं अन्य जानकार ऐसे स्थलों का पता लगा रहे हैं जिनसे इस प्राचीन देश के अतीत इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, कला और सौन्दर्य बोध आदि विभिन्न पहलुओं का पता चलता हैं

लेकिन देश में तेज गति से बढते औद्योगीकरण, शहरीकरण, बढती आबादी और विकास ने इन प्राचीन स्मारकों पर बुरा प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। इन स्मारकों के को जितना महत्त्व दिया जाना चाहिए आज नहीं दिया जा रहा है। दूरदराज के इलाकों मे फैले इन स्मारकों से पुरातत्त्व महत्त्व की वस्तुओं, मुर्तियों और अन्य चीजों की चोरी और तस्करी करके विदेशों में बेचकर मोटी रकमें कमाई जा रही हैं। भारत की अस्मिता की इस बिक्री को रोकने के लिए कानून और व्यवस्था तो की गयी है, लेकिन यह कितनी प्रभावकारी हो रही है इसका पता इस बात से चलता है कि पश्चिम के देशों के प्रमुख शहरों में इन वस्तुओं की अक्सर खुलेआम नीलामी होती रहती है।

महानगरों और बडे शहरों में बढती आबादी के दबाव, इन शहरों के स्थानीय अधिकारियां और कर्मचारियों की मिलीभगत के कारण इन इमारतों पर अवैध कब्जे किया जाना एक साधारण बात हो गयी है। कानूनी खमियों और पुलिस एवं प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा इन स्मारकों के महत्व को ठीक रूप से नहीं समझे जाने के कारण ये स्मारक बर्बाद हो रहे हैं। सदियों पुरानी तकनीक और सामग्री के इस्तेमाल से बने और सर्दी-गर्मी, बरसात, भूकम्प आदि झेल रहे ये स्मारक अपने सौन्दर्य और स्वरूप को खो रहे हैं।

आर्थिक और औद्योगिक विकास के साथ पर्यावरण प्रदूषण इन स्मारकों के लिए एक गम्भीर समस्या के रूप में सामने आया है विश्व धरोहर ताजमहल का दूधिया संगमरमर पास-पडोस के क्षेत्रों में बने कल-कारखानों से निकलती जहरीली गैसों के प्रभाव के कारण अब पीला पड गया है। देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के बाद

ताजमहल को बचाने के लिए उसके आस-पास हरित क्षेत्र बनाने का प्रयास हो रहा है लेकिन शरद पूर्णिमा की रात की धवल दूधिया चाँदनी में ताज देखने के लिए पूरी दुनिया से ताजनगरी आगरा में आने वाले पर्यटकों को अब वह ताज नहीं दिखता जिस खूबसूरती के लिए वह स्मारक पूरी दुनिया में जाना जाता है।

ताज की खूबसूरती को यमुना का लहराता पानी और बढाता था लेकिन उसी यमुना का पानी अब गंदा और विषैला होकर इस स्थिति में पहुँच गया है कि उससे ताज की नींव तक को खतरा उत्पन्न होने लगा है। अकबर के गूरू शेख सलीम चिश्ती की दरगाह पर लगा अष्टधातु का सोने का परत चढा कलश चोरी हो गया है तो फतेहपुर सीकरी का महान शहर अब आस-पास की पहाडियों से पत्थर निकाले जाले के लिए किये जा रहे विस्फोट के कारण ढहने लगा है। अजन्ता एलोरा की गुफाओं में पर्यटकों की भीड-भाड हर मौसम में रही है, जबकि खुजराहों के मन्दिर पास के हवाई अडडे से बार-बार उडने और उतरने वाले भारी-भरकम जेट विमानों की गूँजती आवाजों से थर्राकर ढह रहे हैं। जौक की मजार पर शौचालय बनता है तो गालिब की हवेली गेस्ट हाउस और दुकानों में बदली जा रही है।

शाहजहानाबाद की गलियों में दिल्ली की महारानी रजिया बेगम की कब्र पर बकरियाँ काटी जाती है। कुतुबमीनार के आस-पास के खण्डहरों को पंचतारा दुकानों में बदला जा रहा है। ऐतिहासिक जन्तर-मन्तर के आस-पास बहुमंजिली इमारतें बन जाने के कारण काम का नहीं रहा।

इस सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखने के लिए 1958 में 'एनशियंट मोन्यूमेंट प्रिजर्वेशन ऐक्ट' बनाया गया था। 1992 में अयोध्या में राम मन्दिर विवाद के चलते इस कानून में व्यवपक फेरबदल किया गया। लेकिन अभी भी इस कानून में खामियाँ होने के इन्कार नहीं किया जा सकता। यह कानून अभी भी इतना कमजोर और लाचार है कि इस कानून की धाराओं और नियमों, उपनियमों का उल्लेख करने वाले को पाँच हजार रूपये जुर्माना या तीन महीने की सजा अथवा दोनों की अधिकतम सजा हो सकती है। ललाफीताशाही और इन स्मारकों के महत्व की बजाय उसके दुरूपयोग से होने वाली कमाई इन इमारतों की जमीन बेचे जाने की समस्या की ओर आँख बन्द करने के लिए प्रेरित करते है। आर्केलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया या राज्य सरकारों के अधिकारी ऐसे मामलों में ज्यादा पुलिस ही रिपोर्ट दर्ज कराकर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री समझ लेते हैं,

इसका एक उदाहरण इस बात से देखा जा सकता है कि राजस्थान के ऐतिहासिक शहर जैसलमेर की किले की दीवारें इसलिए ढह रही हैं क्योंकि सीवरेज के डस्पोजल की ठीक व्यवस्था नहीं है।

बगीचों का शहर और कर्नाटक की राजधानी होने के बावजूद बंगलौर के किले की दीवारें खराब हो रही हैं। वहाँ गन्दगी के ढेर कभी भी देखे जा सकते हैं। हिमाचल के हमीरपुर जिले में स्थिति ऐतिहासिक और पुरातत्व के महत्त्व का नरमहेश्वर मन्दिर हो या कर्नाटक में हम्फी, अवैध कब्जों से तो शायद ही कोई स्मारक अछूता रहा हो। 1992 के संशोधन में यह व्यवस्था तो की गई कि संरक्षित स्मारक के दो सौ मीटर के दायरे में बिना पुरातत्व विभाग की मंजूरी के कोई निर्माण नहीं हो सकता। लेकिन इस परिधि में किये गये निर्माण को ढहाने का कोई प्रावधान नहीं है। परिणाम यह है कि नौकरशाही के संरक्षण और लापरवाही के कारण अवैध निर्माण करके पैसा तो बटोरा जा रहा है लेकिन इमारतों के रख-रखाव या उसकी बेहतरी की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पुरातत्व विभाग के बज्ट में तो उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है लेकिन स्मारकों की मरम्मत और देखभाल के बजाय धन का बडा भाग नौकरशाही के वेतन-भत्तों और अन्य सुविधाओं पर खर्च हो जाता है।

इन स्मारकों में पूजा-अर्चना करने का अधिकार माँगने को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में आन्दोलन होते रहे हैं। लेकिन भाजपा और सहयोगी संगठनों द्वारा शुरू किये गये आन्दोलन के बाद विभिन्न धर्मों और समुदायों ने इस दिशा में विशेष जोर पकडा है। पिछले वर्षो में अनेक संरक्षित स्मारकों में नमाज अदा किये जाने की माँग को लेकर धरने-प्रदर्शन तक का रास्ता अपनाया गया है गोवा के चर्च हों या उडीसा के उदयगिरि स्थित गुफाएँ, साँची स्थित सतधारा स्तूप हो या बनारस और मथुरा के मन्दिर हों, निजी स्वार्थो के लिए इन स्मारकों को मोहरा बनाने की लगातार कौशिश हो रही है। लेकिन इन प्रयासों का जिस तरह से सामूहिक विरोध होना चाहिए, वह नहीं हो पा रहा है। आम लोग इन मुद्दों से अपने को अलग ही रखना चाहते है। आवश्यकता इस बात की है कि लोग अपनी परम्परा और विरासत को बचाने के लिए आगे आये। ये स्मारक आज हमारे हाथ में भविष्य की अमानत है, यह मानकर इनके संरक्षण के लिए जन-आन्दोलन की आवश्यकता है। स्वयंसेवी संगठनों ने इस दिशा में पहल की है। अदालतों ने ऐसे मामलों में गम्भीर रूख अपना लिया है।

सरकार के साधन हैं निजी क्षेत्र और निजी क्षेत्र इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। दिल्ली की एवं कुछ अन्य सरकारों ने इस दिशा में प्रयास शुरू किया है। दिल्ली सरकार ने विभिन्न औद्योगिक घरानों से प्रस्ताव किया है कि वे आगे आये और इन स्मारकों के संरक्षण का जिम्मा सँभाले। लेकिन इतिहासकारों और विशेषज्ञों का एक वर्ग इस प्रस्ताव का बहुत समर्थक नहीं है। उनका तर्क है कि निजी क्षेत्र की कम्पनियाँ स्मारकों के संरक्षण की बजाय उनके व्यावसायिक इस्तेमाल को प्राथमिकता देगी, क्योंकि उनका उद्देश्य मुनाफा कमाना होगा न कि संरक्षण करना। ये लोग हाल हाल ही में ताजमहल में हुए यात्री शो, दिल्ली में पुराने किले में हुए फैशन शो और खिजली वंश के दौरान बने होजखास और समीपवर्ती इमारतों के दुस्पयोग का उदाहरण देते हैं। इस वर्ग के तर्कों को पूरी तरह नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। साथ ही यह भी मानना होगा कि भविष्य की पीढी की इस अमानत का संरक्षण वर्तमान पीढी की जिम्मेदारी है। सरकार अपने सीमित साधनों को देखते हुए सीमा से अधिक प्रयास नहीं कर सकती है।

सरकार ने हाल ही के वर्षो में अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। केन्द्र सरकार के संस्कृतिक विभाग ने एक सौ करोड रूपये से 'नेशनल कल्चर फण्ड' बनाने का फैसला किया है लेकिन इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। साथ ही पुरातत्व महत्त्व के स्मारकों के संरक्षण के लिए जरूरी है एक जन आन्दोलन। लोगों में इस बात की भावना जगानी होगी कि वे इन धरोहरों को पहचानें, उनके महत्त्व को समझें। अपने-अपने क्षेत्रों में अपने-अपने तरीके से इनका संरक्षण करने का प्रयास करें। इसके लिए यह जरूरी है कि यह जानने का प्रयास करें कि क्षेत्र विशेष में कौन से स्मारक हैं, कौन से जाने-पहचाने हैं और कौन से अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण या अनजाने हैं। विश्वविद्यालय, स्कूल, कॉलेज इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका आम लोगों की है। वे अपने आस-पास स्वयं देखें। स्मारकों को पहचानें उन्हें संरक्षित करने का स्वयं प्रयास करे। स्थानीय प्रसाशन भी सहयोग करे, तभी हम भविष्य की पीढियों के प्रति इस अमानत को सुरक्षित रख सकेंगे।

भारत का वास्तुशिल्प सौन्दर्य: एक झलक-हिमाचल की चोटियों से लेकर कन्याकुमारी तक और उत्तर-पूर्व में म्यांमार की सीमाओं से शुरू होकर कच्छ के रन तक फैले भारत के वास्तुशिल्प सौन्दर्य का जायजा लेने के कई तरीक हो सकते हैं। हम इसे भौगोलिक आधार पर विभक्त करके विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाने वाले स्मारकों को देख सकते हैं। दूसरा तरीका यह भी हो सकता है कि हम इस महान देश के पाँच हजार साल से

भी अधिक पुराने इतिहास को समय के विभिन्न खण्डों में विभक्त करके इस पर नजर डाल सकते हैं। एक अन्य तरीका यह हो सकता हैकि शासक वंशों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किये गये निर्माणों की विवेचना कर सकते हैं। एक अन्य तरीका यह भी हो सकता है कि हम विभिन्न धर्मों जैसे हिन्दू, बौद्ध, जैन, इस्लाम, राजपूत के आधार पर स्थापत्य कला के नमूनों और वास्तुशिल्प सौन्दर्य की चर्चा कर सकते हैं। इसी प्रकार हम विदेशी स्थापत्य कला और वास्तुशिल्प को आधार बनाकर यूरोपीय और पाश्चात्य कला के नमूनों की चर्चा कर सकते है। प्रस्तुत लेख में इन सभी पहलुओं को एक साथ ही लेने का प्रयास किया गया है। इसमे इस बात को प्राथमिकता देने का प्रयास किया गया है कि बेहद लोकप्रिय वास्तुशिल्प के नमूनों-लाल किला, ताजमहल, कोणार्क, खुजराहों जैसे देश और दुनिया में जाने-पहचाने स्मारकों की बजाय अपेक्षाकृत 25 चर्चित स्मारकों को प्राथमिकता दी जाये।

भारत के वास्तुशिल्प सौन्दर्य पर एक नजर डालें तो पता चलता है कि ईसा के जन्म के तीन हजार साल पहले भी नगर निर्माण और वास्तुकला बेहद उन्नत स्तर की थी। पंजाब में हडप्पा और सिन्ध (अब पाकिस्तान) में किये गये उत्खनन से प्राप्तप्रमाणों से पता चलता है कि उस समय के शहरों को बेहद नियोजित तरीके से बसाया जाता था। घरों में स्नानागार बनाये गये थे और पानी की निकासी का निश्चिय प्रबन्ध था। इस सभ्यता के बाद वैदिक काल के पर्याप्त प्रमाण अब देखने को नहीं मिलते हैं लेकिन यह माना जाता है कि शहरों के चारों और सुरक्षा के लिए दीवार बनाने की परम्परा की शुरूआत हुई जो ईसा के बाद 16वीं और 17वीं शताब्दी तक जारी रही। शहर के चारों ओर दीवार उन गुम्बद और शहर में आने-जाने के लिए बनायी गयी दीवारें तो आज भी देखी जा सकती है। बौद्ध साहित्य में नियोजित शहरों और अन्य महलों का अनेक स्थलों पर चर्चा है। सम्राट अशोक के कार्यकाल में पत्थर के शिलालेखों और आधुनिक भारत के शासन के प्रतीक के रूप में अपनाये गये सिंह के प्रतीक को सारनाथ स्तम्भ से लिया गया है। उस युग के स्तूप और विहार तथा गुफाओं में किये गये कार्य आज भी देखे जा सकते हैं। पूना के निकट की गुफाओं के मन्दिर ईसा के जन्म के दो शताब्दी पहले के हैं। ईसा के जन्म के एक शताब्दी पूर्व बने केरल के चैत्या हाल इसके घोडे के नाल के रूप में बनी खिडकियाँ और चित्रकारी आज भी दर्शकों का मन मोह लेती है। भरहुत स्तूप के भव्य द्वारा और उस पर की गयी कसीदाकारी और यक्षणी तथा नागराज आज भी उस युग की भव्यता के प्रतीक हैं। गया में बोधिवृक्ष मन्दिर अपने आप में एक अनोखा स्मारक है। दक्षिण में इसी युग का अमरावती में बना स्तूप है, जिसकी भव्यता देखते ही बनती है।

गुप्त वंश के शासनकाल (320-650 ए. डी.) के बीच भारतीय स्थापत्य कला अपनी चरम सीमा पर थी। बनारस के निकट सारनाथ का धमेख स्तूप, अजन्ता की गुफाओं में खम्भों पर की गयी सजावट आज भी दर्शकों का मन मोह लेती है। गुप्त वंश के बाद सन् 650-900 के बीच दक्षिण में चालुक्य, राष्ट्रकूट और पल्लव तथा उत्तर में पाल वंश के राजाओं के कार्यकाल के दौरान भारतीय स्थापत्य और वास्तुशिल्प के नमूनों के अवशेष आज थी विद्यमान हैं। सातवीं सदी में बना नालन्दा विश्व विद्यालय की इमारत उस युग की याद दिलाती है।

प्रहाद स्थित शिव का विरूपक्ष और बदामी स्थित वैष्णव गुफा मन्दिर चालुक्य वंश के युग में स्थापत्य कला की भव्यता का आज भी प्रदर्शन करता है। राष्ट्रकूटों के शासनकाल में बना एलोरा का कैलाश मन्दिर और एलोरा का शिव मन्दिर, पल्लव वंश द्वारा नौवीं शताब्दी के प्रारम्भ में महाबलिपुरम् में बनाये गये सात रथ और काँची में बना कैलाशनाथ मन्दिर स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करते हैं।

950 और 1050 के बीच बनाये गये खुजराहों के मन्दिर आज विश्व की धरोहर माने जाते हैं। चालुक्यों, राजपूतों द्वारा निर्मित स्मारकों ने तो कला के अनेक नये क्षेत्र विकसित किये। मध्य प्रदेश का उदयेश्वर और गुजरात में सिद्धपुर स्थित रूद्रमल मन्दिर और राजस्थान के माउण्ट आबू के निकट संगमरमर से बने मन्दिरों का दुनिया में कोई उदाहरण नहीं मिलता।

7वीं और 13वीं सदी के बीच उडीसा में बने मन्दिर नागरा शैली के उल्लेखनीय उदाहरण है। पुरी स्थित लिंगराज मन्दिर की भव्यता और 1238 से 1264 के बीच कोणार्क में बने सूर्य मन्दिर की दीवारों पर बनी मूर्तियाँ आज पूरी दुनिया में सराही जाती हैं। 15 वीं शताब्दी में हिन्दू राजाओं द्वारा राजपूताना और बुन्देलखण्ड में बनाये गये विशाल किलों और महलों में ग्वालियर, दतिया, अजमेर, जोधपुर के किले प्रमुख है।

850 और 1600 के बीच दक्षिण भारत में चोल, पांड्य विजानगर के राजाओं तथा तंजौर मदुरै के नायक वंश के शासनकाल में किये गये निर्माण कार्य काँची विजयनगर और वेल्लूर में आज भी देखे जा सकते हैं। विजयनगर का बिठोवा मन्दिर, मदुरै का मीनाक्षी मन्दिर इस युग की कला का जीवन्त उदाहरण है।

12वीं शताव्दी में उत्तर भारत में इस्लामिक शक्तियों का उदय हुआ और इनके साथ भारत में इस्लामी कला की शुरूआत हुई। दिल्ली उसका प्रमुख केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। कुतुबमीनार और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बने स्मारक आज भी उस युग की स्थापत्य कला के नमूने हैं। 1320-1413 के बीच तुगलक वंश द्वारा बनाया गया

तुगलकाबाद का किला आज इसलिए चर्चा में है कि उसकी जमीन और दीवार के पत्थरों को बेचा जा रहा है। इसी वंश के फिरोजशाह कोटला नामक सथान पर बना क्रिकेट स्टेडियम है।

टहमदशाही वंश द्वारा बनाये गये अहमदाबाद की जामा मस्जिद और मरखेज में बना शेख अहमद का मकबरा अपनी तरह के विशाल और भव्य स्मारक है। जुनागढ, खेडा और चम्पारन के स्मारक मुहम्मद बेघरा के युग के हैं। गुलबर्गा की जामा मस्जिद, दौलताबाद का किला, बीदर में अहमदवली शाह का मकबरा, सासाराम में शेरशाह का मकबरा आदि अपने-अपने क्षेत्र की कला व वास्तुशिल्पके प्रतीक हैं। हुमायूँ का मकबरा तथा आगरा और लाहौर के किले मुगलवंश के प्रारम्भिक दौर का प्रतिनिधित्व करते हैं। फतेहपुर सीकरी अकबर को निर्माता के रूप में दर्शाता है। श्रीनगर के शालीमार और निशात बाग तथा सिकन्दरा में अकबर का मकबरा जहाँगीर के शासनकाल की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। शाहजहाँ ने लाल पत्थर के साथ राजपूताना में उपलब्ध संगमरमर का इस्तेमाल करके ताजमहल बनवाया जिसका दुनिया में कोई जोड नहीं है दिल्ली का लाल किला, जामा मस्जिद और वर्तमान में पुरानी दिल्ली कहा जाने वाला शाहजहानाबाद शाहजहाँ के दूरगामी और विलक्षण निर्माण प्रतिभा का उदाहरण कहे जा सकते हैं।

चौथी शताब्दी में सीरिया से केरल में आकर बसने वालों ने चर्च बनाने शुरू किये। केरल में बनने वाले चर्चों में हिन्दू मन्दिरों की कला का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। गोवा में आने वाले पुर्तगालियों ने यूरोपीय वास्तुकला की भारत में शुरूआत की। पुराने गोवा में बना जीसस चर्च इसका सबसे बडा उदाहरण है। ब्रिटिश शासन के दौरान कोलकत्ता में बने सेण्ट पॉल चर्च ने युरोपीय परम्परा को आगे बढाया। आन्ध्र प्रदेश में बना डोर्नाकल कैथेडल ऑफ चर्च ऑफ साउथ इण्डिया और तमिलनाडु के उत्तरी अर्काट जिले में क्रिस्टू कुला आश्रम चैपल आधुनिक रूपों के उदाहरण हैं।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश शासन के दौरान बने स्मारकों में हिल स्टेशनों पर बनाये गये चर्च और अन्य इमारतें भारत में ब्रिटिश स्थापत्य कला के प्रतीक नहीं है। नई दिल्ली के निर्माण में उसके विभिन्न रूप मुखरिन हुए हैं। कोलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल और मुम्बई के प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम में भारतीय वास्तुकला के प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं। यदि हम उत्तर-पूर्वी राज्यों की ओर देखें तो वह इस क्षेत्र की स्थापत्य कला के नमूनों का भण्डार है। अरूणाचल प्रदेश की तवांग मोनास्ट्री और बौद्ध मन्दिर में इस सीमान्त प्रदेश की परम्परागत संस्कृति की झलक मिलती है तो त्रिपुरा में त्रिपुरासुन्दरीऔर भुवनेश्वरी मन्दिर पूरे देश में दर्शकों को आकर्षित करते हैं।

सन्दर्भ

1. रूहेला. एस. पी, (2012): विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
2. सिहं, योगेन्द्र, (2016): भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. सिन्हा, आलोक, (2014-15): भारतीय समाज, ग्रीण लीफ पब्लिकेशन, वाराणसी।
4. त्यागी, गुरसरनदास, (2016): श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. पुरोहित, अंजना (2013): भारतीय कला, बुक ओसियन पब्लिकेशन, वाराणसी.
6. भारद्वाज, चन्द्रशेखर डॉ: भारतीय वास्तुकला का इतिहास, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

महाविद्यालय के विषय में

शासकीय महाविद्यालय लवकुशनगर की स्थापना सन् 1983 में हुई थी। यह छतरपुर जिला मुख्यालय से 60 किलोमीटर तथा अंतर्राष्ट्रीय धरोहर खजुराहो से 50 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस महाविद्यालय में स्नातक (कला एवं विज्ञान संकाय) तथा स्नातकोत्तर (हिन्दी, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, गणित एवं जन्तुविज्ञान) की कक्षायें संचालित हैं। जिसमें लगभग 3200 छात्र/छात्रायें अध्ययनरत हैं। जो लगभग आसपास के 40 किलोमीटर की दूरी तय करके आते हैं। छात्रों को बहुआयामी शिक्षा प्रदान करने एवं सभी गतिविधियों में शामिल करने, उनमें समग्र विकास को प्रोत्साहित करने एवं एक शिक्षित, सक्षम और जागरुक व्यक्ति बनाने में महाविद्यालय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। महाविद्यालय में अध्ययन कर चुके छात्र विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं तथा महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी -508 गली नं. 17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो.08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com

ISBN 978-93-47100-40-6
9 789347 100406